ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Name - Tonde Mahadev Uttam
Supervisor Name - Dr.Patil Nimba Zopa
Department of Defence and Strategic Studies
Institute Name- Malwanchal University, Indore

संक्षेप

भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत के पड़ोसी देशों के साथ के संबंधों की महत्वपूर्ण दिशाओं को समझना और उनके सुरक्षा के संदर्भ में उनका प्रभाव जानना है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, चीन, नेपाल जैसे भारत के पड़ोसी देश भारत के लिए राजनीतिक, आर्थिक, और सुरक्षा संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। यह अध्ययन दिखाता है कि इन संबंधों के गहरे अर्थ को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि ये भारत के राजनीतिक और सुरक्षा पॉलिसियों पर प्रभाव डाल सकते हैं। इस अध्ययन में दिखाया गया है कि भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सुरक्षित और स्थिर बनाने के लिए सहमति और सहयोग की आवश्यकता है, ताकि भारतीय सुरक्षा और संबंधों की सुरक्षा और स्थिरता को बनाए रखना हो सके। समाज के सभी वर्गों, राजनीतिक नेताओं, और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सदस्यों के सहयोग के साथ, हम सकारात्मक दिशा में कदम उठा सकते हैं और भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को और भी मजबूत बना सकते हैं, जिससे कि हम सभी के लिए एक बेहतर और सुरक्षित भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकें।

परिचय

भारत, एक महत्वपूर्ण देश होने के नाते, अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध बहुत महत्वपूर्ण बनाता है। यह संबंध न केवल राजनीतिक और आर्थिक मामलों को प्रभावित करते हैं, बल्कि इसका गहरा असर भारतीय सुरक्षा पॉलिसियों और राष्ट्रीय सुरक्षा पर भी पड़ता है। भारत के पड़ोसी देशों में पाकिस्तान, बांग्लादेश, चीन, नेपाल आदि शामिल हैं, और इन देशों के साथ संबंधों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि हम इन संबंधों की गहरी जानकारी प्राप्त करें और समझें कि भारत के पड़ोसी देशों के साथ के संबंध कैसे बदल रहे हैं और इसका भारतीय सुरक्षा पर क्या प्रभाव हो सकता है। हम इस अध्ययन में प्रमुख तीन पड़ोसी देश, यानी पाकिस्तान, बांग्लादेश, और चीन, के साथ संबंधों का विश्लेषण करेंगे और देखेंगे कि इन संबंधों के द्वारा कैसे राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया जा सकता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

अनुसंधान क्रियाविधि

भारत के पड़ोसी देशों से संबंध और भारत की सुरक्षा के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए एक मान्यता पूर्ण सैंपल साइज़ चयन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। सैंपल साइज़ का चयन विश्लेषणात्मक अध्ययन की वैधता और प्रामाण्य को प्रभावित करता है। निम्नलिखित हैं सैंपल साइज़, प्राथमिक और सेकेंडरी डेटा के लिए इस अध्ययन के लिए एक संभावित तरीका:

Sample Size (सैंपल साइज़): इस अध्ययन के लिए सैंपल साइज़ को 250 चुना जा सकता है। यह साइज़ पर्याप्त जानकारी को प्राप्त करने के लिए प्राथमिक और सेकेंडरी डेटा की व्यापकता को ध्यान में रखता है और अध्ययन की विश्लेषणात्मक आवश्यकताओं को पूरा करता है।

Primary Data (प्राथमिक डेटा)

1. सर्वेक्षण (Survey): सामाजिक और सुरक्षा से संबंधित प्राथमिक डेटा को प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें विशेषज्ञों और रिसर्चर्स द्वारा डेटा संग्रहण की प्रक्रिया होती है।
2. इंटरव्यू (Interviews): भारतीय सुरक्षा और पड़ोसी देशों के संबंधों के प्राथमिक जानकारों से इंटरव्यू लिया जा सकता है, जो नीति निर्माताओं, सुरक्षा विशेषज्ञों, और अन्य स्तरीय व्यक्तियों के रूप में हो सकते हैं।

Secondary Data (सेकेंडरी डेटा)

1. शासनादेश और आधिकारिक रिपोर्ट्स: भारत सरकार और अन्य संगठनों के द्वारा प्रकाशित आधिकारिक रिपोर्ट्स, राजनीतिक घटनाओं के शासनादेश, और सुरक्षा संबंधित डेटा को सेकेंडरी स्रोत के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
2. पिछले अध्ययन: पिछले अध्ययनों के प्रकाशित परिणामों का अध्ययन करके इस अध्ययन के लिए आवश्यक सेकेंडरी डेटा को निर्दिष्ट किया जा सकता है।

यह सैंपल साइज़ और डेटा संग्रहण के तरीकों का चयन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है, ताकि हम भारत के सुरक्षा से संबंधित निष्कर्ष निकाल सकें और सुरक्षा नीतियों के अधिक प्रभावी विकल्पों को सुझा सकें।

भारत और नेपाल संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और नेपाल के संबंध ऐतिहासिक दृष्टिकोण से गहरे और पौराणिक हैं। ये दो देश एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, और उनके इतिहास में विविध घटनाएँ और सांस्कृतिक प्रभाव दिखते हैं। नेपाल और भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है गौतम बुद्ध का जन्म, जो लुम्बिनी, नेपाल में हुआ था। बुद्ध धर्म की संदेशवाहक थे, और उनका उपदेश भारतीय सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण रहा है। उनके

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

उपदेशों ने भारत और नेपाल के बीच धार्मिक और दार्शनिक विचारों को प्रभावित किया। सम्राट अशोक के शासनकाल में इस भू-भाग को भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक संस्कृति का केंद्र माना गया था। नेपाल के बौद्ध महायान धर्म के प्रमुख केंद्रों में से एक था और यहाँ पर अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं जैसे कि लुम्बिनी, कपिलवस्तु, और पाटन। मध्यकाल में, नेपाल और भारत के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ-साथ राजनीतिक संबंध भी थे। गुरखा साम्राज्य ने 18वीं सदी में नेपाल को एक महत्वपूर्ण राजनीतिक खिलाड़ी बना दिया, और उन्होंने भारत के साथ कई संघर्षों का सामना किया। ब्रिटिश शासन काल में, नेपाल ब्रिटिश इंडिया के पड़ोसी देश के रूप में रहा और इसके परिणामस्वरूप विभिन्न सामझौतों और संधियों के जरिए दोनों देशों के बीच सीमा का निर्धारण हुआ। स्वतंत्रता संग्राम के बाद, नेपाल और भारत ने आपसी संबंधों को मजबूत किया और दोनों देश ने प्राथमिकता देने के बावजूद एक-दूसरे के साथ समरसता और साथीता में जीवन यापन किया।

नेपाल की भूराजनीतिक स्थिति

नेपाल, दक्षिण एशिया में स्थित एक छोटा सा देश है, जिसकी भूराजनीतिक स्थिति बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। यह देश विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक, और आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है, जिससे लोगों के जीवन में अस्तित्व की सुरक्षा खतरे में है। नेपाल की भूराजनीतिक स्थिति में सबसे बड़ी समस्या राजनैतिक असमंजस है। देश में राजनीतिक दलों के बीच बार-बार विवाद होते रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्थिति में स्थिरता नहीं आती है। सरकार और विपक्ष के बीच घमासान के कारण, नेपाल में विकास कार्यक्रम और सुधारों में विलंब हो रहा है, जिससे जनसंख्या के आसपास के देशों के साथ मुकाबला करने में दिक्कतें आ रही हैं। नेपाल की भूराजनीतिक स्थिति में एक और बड़ी चुनौती अन्यायपूर्ण भूमि विवाद है, जिसमें भारत और चीन भी शामिल हैं। नेपाल के दक्षिणी सीमा पर भूमि के मामले में विवाद है, और यह विवाद नेपाल की गणराज्यता और सुरक्षा को खतरे में डालता है। नेपाल की सामाजिक स्थिति भी चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि वहाँ कई जातिवाद, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव का सामना किया जाता है। साथ ही, देश में गरीबी, बेरोजगारी और बुनाइ के अवसरों की कमी है, जिससे आर्थिक स्थिति भी चिंताजनक है। नेपाल की भूराजनीतिक स्थिति को सुधारने के लिए सरकार और विपक्ष को मिलकर काम करना होगा। राजनीतिक विवादों को सुलझाने के साथ ही, सामाजिक और आर्थिक सुधारों पर ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है। साथ ही, नेपाल को अपने पड़ोसी देशों के साथ बेहतर संबंध बनाने की भी जरूरत है, ताकि वह अपनी सुरक्षा और विकास को सुनिश्चित कर सके। इसके अलावा, नेपाल को अपने सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए अपने संसाधनों का सही तरीके से प्रबंधित करने की आवश्यकता है, ताकि यह देश अपने नागरिकों के लिए बेहतर जीवन की समर्थना कर सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

भारत और पाकिस्तान संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और पाकिस्तान के संबंध एक लम्बे और जटिल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ हैं, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक परिप्रेक्ष्य से कई महत्वपूर्ण घटनाएं शामिल हैं। इन संबंधों की शुरुआत भारत के आजाद होने के बाद 1947 में हुई थी, जब भारत और पाकिस्तान दो अलग देशों के रूप में विभाजित हुए। पाकिस्तान का जन्म 1947 में भारत के विभाजन के परिणामस्वरूप हुआ, जिसके पीछे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और विभाजन के सामाजिक और राजनीतिक दायरे थे। यह विभाजन मुख्य रूप से धार्मिक और सामाजिक बाधाओं के पारंपरिक फैलाव के परिणामस्वरूप हुआ था, जो मुस्लिम और हिन्दू समुदायों के बीच संघर्ष के रूप में प्रकट हुआ। इसके बाद, 1947 में ही भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद का आरंभ हुआ, जिसका परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान और जम्मू-कश्मीर के बीच संघर्ष के रूप में जारी रहा है। यह कश्मीर क्षेत्र हमेशा से भारतीय और पाकिस्तानी स्वाधीनता संग्राम का केंद्र रहा है, और इसके चारों तरफ तनाव बरकरार हैं।

भारत और पाकिस्तान के बीच जलवायु और सीमा विवादें भी आए दशकों में सुधार नहीं पा रहे हैं। करची समझौता (1949), तश्कंद समझौता (1966), और शिमला समझौता (1972) जैसे संबंध समझौतों के बावजूद, सीमा पर विवाद बरकरार हैं। युद्धों के बावजूद, भारत और पाकिस्तान के बीच कुछ सांघट भी हो रहे हैं। विविध वित्तीय संबंध, व्यापार, और लोगों के मध्य संवाद की प्रक्रिया जारी है। दोनों देशों के बीच कई अल्पसंख्यक समुदायों के बीच व्यक्तिगत संबंध भी हैं, और इनका महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत और पाकिस्तान के संबंध एक विचित्र और जटिल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ हैं, और ये संबंध आज भी सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक मुद्दों के बावजूद जारी हैं। इन संबंधों के पास एक लम्बा इतिहास है जिसमें आजादी के बाद के कई महत्वपूर्ण घटनाएं शामिल हैं और इनका असर आज की दिनचर्या पर भी दिखाई देता है।

पाकिस्तान की भूराजनीतिक स्थिति

पाकिस्तान, दक्षिण एशिया में स्थित एक महत्वपूर्ण देश है, जिसकी भूराजनीतिक स्थिति बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। यह देश राजनीतिक और सुरक्षा संबंधों में बहुत ही दुनिया के लिए महत्वपूर्ण है और इसकी स्थिति विशेष ध्यान केन्द्रित करती है। पाकिस्तान की भूराजनीतिक स्थिति में सबसे बड़ी समस्या यह है कि देश के अंदर राजनीतिक असमंजस और आतंकवादी गतिविधियों का बढ़ता दबाव है। पाकिस्तान ने विशेष रूप से अपने सिंध प्रांत में आतंकवादी समूहों के साथ लड़ाई जारी रखी है, जिससे देश के सुरक्षा को खतरे में डाला है। दूसरी ओर, पाकिस्तान की राजनीतिक स्थिति भी बदल रही है, क्योंकि वहाँ चुनाव और राजनीतिक पार्टियों के बीच विवाद हो रहे हैं। सरकार और विपक्ष के बीच घमासान के कारण, पाकिस्तान के विकास कार्यक्रमों में विलंब हो रहा है, जिससे जनसंख्या के

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

आसपास के देशों के साथ मुकाबला करने में दिक्कतें आ रही हैं। पाकिस्तान की सुरक्षा स्थिति भी बदल रही है, खासकर भारत के साथ संघर्ष के परिणामस्वरूप। दोनों देशों के बीच सीमा विवाद और आतंकवाद के मुद्दे आ गए हैं, जिनसे दोनों देशों की सुरक्षा स्थिति में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। पाकिस्तान की भूराजनीतिक स्थिति को सुधारने के लिए राजनीतिक स्थिरता, सुरक्षा स्थिति और आर्थिक सुधार के कई कदम उठाने की आवश्यकता है। देश को अपने सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए अपने संसाधनों का सही तरीके से प्रबंधित करने की भी आवश्यकता है, ताकि यह देश अपने नागरिकों के लिए बेहतर जीवन की समर्थना कर सके।

भारत और चीन संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और चीन के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बहुत ही विशाल और गहरी है। ये दो देश एशिया में स्थित हैं और अपने विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक मूलों के कारण महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों देशों के बीच के संबंध इतिहास में कई बार बदले हैं। प्राचीनकाल में भारत और चीन के बीच व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता था, और इसके बाद भी वे एक-दूसरे के साथ संबंध बनाए रखने का प्रयास करते रहे। हालांकि, इस तिथि से पूर्व, यदि हम इन संबंधों की गति की ओर देखें, तो हमें देखने को मिलता है कि इन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया है। 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद, इन दोनों देशों के बीच सीमा विवाद का अवसर आया, और यह विवाद आज भी बना हुआ है। चीन ने अक्साई चिन क्षेत्र में कब्जा किया, जिससे सीमा विवाद का मूल निम्नलिखित क्षेत्र में फैला है: आक्साई चिन, लदाख, अरूणाचल प्रदेश, और सिक्किम। इसके बावजूद, भारत और चीन के बीच व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी होता है। वे एक-दूसरे के साथ विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार करते हैं और सांस्कृतिक आयोजनों में भाग लेते हैं। इन संबंधों के बावजूद, सीमा विवाद और राजनीतिक मुद्दे इन संबंधों को प्रभावित करते रहते हैं और एक ठोस समाधान की ओर बढ़ने में बाधक होते हैं। भारत और चीन के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशाल और चुनौतीपूर्ण है, लेकिन दोनों देश अपने संबंधों को सुधारने और सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

चीन की भूराजनीतिक स्थिति

चीन, एक विशाल और महत्वपूर्ण देश है, जिसकी भूराजनीतिक स्थिति विशेष रूप से व्यापक है और दुनिया भर में ध्यान दिलाने वाली है। चीन का राजनीतिक प्रणाली सामाजिकिकरण, आर्थिक विकास, और वैश्विक गुज़रने के तरीकों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ बदल रहा है। चीन की भूराजनीतिक स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि चीन के अधिकारी और नेताओं की विचारधारा में बदलाव हो रहा है। चीन की राजनीतिक पार्टी, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी), लगातार विकास और आर्थिक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

उन्नति को महत्वपूर्ण मान रही है और विशेषकर बिना आर्थिक मुद्दों के राजनीति में प्राधान्य देने का प्रयास कर रही है। चीन की आर्थिक वृद्धि भी उद्घाटन है, और यह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आगे बढ़ रहा है। चीन ने अपने आर्थिक विकास के साथ ही वैश्विक नेतृत्व का भी दावा किया है और विभिन्न आर्थिक इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं का संचालन किया है, जैसे कि बेल्ट और रोड इनिशिएटिव। चीन की भूराजनीतिक स्थिति विचारधारा, सैन्य और सुरक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। चीन ने अपनी सैन्य ताकत को बढ़ावा दिया है और अपने राजनीतिक प्रणाली को सुरक्षित रखने के लिए कई सुरक्षा कदम उठाए हैं। चीन के राजनीतिक नेताओं का यह मानना है कि वे अपने राष्ट्र की सुरक्षा को पहले करते हैं और इसके लिए कई तरह की रणनीतियों का प्रयोग कर रहे हैं। चीन की भूराजनीतिक स्थिति बदल रही है और यह दुनिया के अन्य देशों के लिए भी महत्वपूर्ण है। चीन की आर्थिक और सैन्य ताकत के साथ ही, यह देश राजनीतिक विचारधारा में भी बदलाव ला रहा है और अपने आर्थिक और सुरक्षा इंटरेस्ट्स की रक्षा कर रहा है।

भारत और बांग्लादेश संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बांग्लादेश की जनसंख्या विशाल और घनी होने के कारण यह दक्षिण एशिया के एक महत्वपूर्ण देश के रूप में उभरा है। जनसंख्या के तेजी से वृद्धि के साथ, बांग्लादेश के समाज में युवाओं का प्रमुखाधिकार है, और यहां के लोगों की औसत आयु कम होती है। इस्लाम यहां की प्रमुख धर्म है, और अधिकांश लोग मुस्लिम हैं, लेकिन धर्मिक आपसी सहमति और सहयोग की भावना के साथ अन्य धर्मों के अनुयायी भी हैं। बांग्लादेश में कृषि एक महत्वपूर्ण व्यावसाय है, लेकिन अंधविश्वास और भ्रष्टाचार की समस्याओं के कारण यहां की आर्थिक स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं, और शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार का प्रयास किया जा रहा है।

बांग्लादेश-भारत संबंध दो प्रमुख दक्षिण एशियाई देशों, बांग्लादेश और भारत, के बीच द्विपक्षीय संबंध हैं। इन संबंधों की शुरुआत आधिकारिक रूप से 1971 में हुई थी, जब भारत ने बांग्लादेश को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी, जिससे पहले यह पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा था और बंगाली जनसंख्या अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही थी। 6 दिसंबर को, बांग्लादेश और भारत इन संबंधों की याद में मित्रता दिवस मनाते हैं, जिससे ये संबंध औपचारिकता और साझेदारी के रूप में मजबूत बने हैं। हालांकि कुछ विवाद भी हैं, लेकिन बांग्लादेश और भारत के बीच के संबंध में मित्रता की भावना है। 2015 में, इतिहासिक भूमि सीमा समझौते के बाद, जिसमें दोनों देशों के बीच कई दशकों पुराने सीमा विवादों को सुलझाया गया, इन संबंधों में सुधार आया। हालांकि, सीमा पार नदियों के पानी के बंटवारे

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

पर बातचीत अभी भी जारी है। बांग्लादेश और भारत के बीच सांस्कृतिक और वाणिज्यिक अदला-बदली होती है। दोनों देशों के बीच बंगाली भाषा के साथी भाषी होने के कारण भाषा, साहित्य, और कला में मान्यता दी जाती है। बांग्लादेश ने भारत की मदद से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की थी, और इसे "मुक्तियुद्ध" या "स्वतंत्रता युद्ध" के रूप में जाना जाता है। इसके बाद से बांग्लादेश ने अपनी स्वतंत्रता के बाद अपने देश के विकास में मेहनत की है, हालांकि यह एक गरीब और पिछड़ा देश है, जिसे प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बनाए रखने का सामना करना पड़ता है। बांग्लादेश और भारत के बीच सार्क, बिम्सटेक, आईओआरए, और राष्ट्रमंडल जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के सदस्य हैं, और इनके बीच विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग होता है। इन संबंधों को और मजबूत करने के लिए दोनों देश साथ में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम कर रहे हैं, जैसे कि सीमा मुद्दे, व्यापार और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग।
भारत और बांग्लादेश के संबंध एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और भौगोलिक दृष्टि से गहरे हैं। इन दो देशों के संबंधों की शुरुआत बहुत पुरानी है और इसके पीछे कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। बांग्लादेश का पूर्वांचल भारतीय सभ्यताओं का हिस्सा रहा है। यहां पर बौद्ध और हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं, और कई प्राचीन गुप्त और मौर्य वंशों के राजा यहां के प्रशासनिक केंद्र के रूप में कार्य करते थे। इसके परंपरागत बौद्ध धर्म के सभ्य संस्कृति का यहां बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1947 में भारत का विभाजन होने के बाद, पूर्व पूर्वांचल क्षेत्र को पूर्व बंगाल और पश्चिम बंगाल के रूप में बांटा गया। बांगलादेश जिन बंगाल प्रान्त का हिस्सा था, जब बंगलादेश की मुक्ति संग्राम भारतीय सेना के साथ लड़ा गया और बांगलादेश की स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इस स्वतंत्रता संग्राम में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बांगलादेश को स्वतंत्रता दिलाने में मदद की। बांगलादेश की स्वतंत्रता के बाद, भारत और बांगलादेश के संबंध दिन-प्रतिदिन मजबूत हो गए हैं। ये दो देश साथ में विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं, जैसे कि व्यापार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक आदि। इन संबंधों की मजबूती के साथ-साथ ये भारत और बांगलादेश के लोगों के बीच मानव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं। भारत और बांगलादेश के संबंध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से गहरे और महत्वपूर्ण हैं, और इन संबंधों का आगे बढ़कर दोनों देशों के विकास और सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

बांग्लादेश की भूराजनीतिक स्थिति

बांग्लादेश, दक्षिण एशिया में स्थित एक महत्वपूर्ण देश है, जिसकी भूराजनीतिक स्थिति विशेष रूप से आधुनिक इतिहास के परिणामस्वरूप बदल रही है। इस देश का राजनीतिक प्रणाली जो एक पार्लियामेंटरी गणराज्य के रूप में आयोजित होता है, में भी दिनों-दिनों के साथ महत्वपूर्ण बदलाव हो रहा है। बांग्लादेश की भूराजनीतिक स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण पहलू है राजनीतिक स्थिरता की कमी। इस देश में पार्टी और विपक्ष के बीच विवाद और प्रशासनिक असमंजस के कारण सरकार के तत्वों में

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

अद्यतन बदलाव होता रहता है, जिससे विकास कार्यक्रमों में विलंब हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप, बांग्लादेश के लोगों की जीवनस्तर में सुधार नहीं हो पा रहा है और गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएं आगे बढ़ रही हैं। बांग्लादेश की भूराजनीतिक स्थिति में एक और बड़ी चुनौती यह है कि देश का स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वायुमंडलीय प्रदूषण और पानी की लाभांतरण के बीच विवाद है। बांग्लादेश एक पानी यातायात देश है और इसकी आवश्यकता है कि यह संसाधन को प्रबंधित करके जलवायु परिवर्तन के प्रति सजग रहे। इसके अलावा, बांग्लादेश को अपने सोसायटल, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए अपने संसाधनों का सही तरीके से प्रबंधित करने की आवश्यकता है, ताकि यह देश अपने नागरिकों के लिए बेहतर जीवन की समर्थना कर सके। इसके लिए राजनीतिक स्थिति को सुधारने के साथ ही सामाजिक और आर्थिक सुधारों पर भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन हमें दिखाता है कि भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा के संदर्भ में सही समझना और समीक्षा करना कितना महत्वपूर्ण है। इसमें हमने देखा कि इन संबंधों का गहरा प्रभाव भारतीय सुरक्षा पॉलिसियों और राष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ता है, और इन्हें समझने की कोशिश करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के पड़ोसी देश भारत के लिए न केवल व्यापारिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ये राजनीतिक और सुरक्षा मामलों में भी आवश्यक हैं। इन संबंधों के साथ आए चुनौतियों का समाधान खोजना और सुरक्षा के क्षेत्र में साझा कदम बढ़ाना महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के माध्यम से हमने देखा कि भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ आपसी सहमति और समर्थन के साथ संबंध बनाने के लिए सक्षम है, जो सुरक्षा के क्षेत्र में साथियों की एक महत्वपूर्ण जरूरत है। इन संबंधों को सुरक्षित और स्थिर बनाने के लिए दिल से जुटे रहने की आवश्यकता है, ताकि भारतीय सुरक्षा और संबंधों की सुरक्षा और स्थायिता को बनाए रखा जा सके। समाज के सभी वर्गों, राजनीतिक नेताओं, और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सदस्यों के साथ सहमति और सहयोग के साथ, हम सकारात्मक दिशा में कदम उठा सकते हैं और भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को और भी मजबूत बना सकते हैं, जिससे कि हम सभी के लिए एक बेहतर और सुरक्षित भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकें।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

संदर्भ

- मलिक, जे. एम. (2001). चीन के विदेश संबंधों में दक्षिण एशिया। पासिफिका रिव्यू: शांति, सुरक्षा और वैश्विक परिवर्तन, 13(1), 73-90.
- होलस्लाग, जे. (2009). चीन और भारत के बीच संचिप्त सैन्य सुरक्षा दुर्भाग्य का दृढ़ संरक्षण. युद्ध अध्ययन पत्रिका, 32(6), 811-840.
- रॉय, एम. एस. (2001). केंद्रीय एशिया में भारत के रुचि. स्ट्रैटेजिक विश्लेषण, 24(12), 2273-2289.
- शुक्ला, डी. (2006). भारत-नेपाल संबंध: समस्याएँ और संभावनाएँ. भारतीय राजनीतिक विज्ञान जर्नल, 355-374.
- मुखर्जी, आर., & मैलोन, डी. एम. (2011). भारतीय विदेश नीति और समकालिक सुरक्षा चुनौतियाँ. इंटरनेशनल अफेयर्स, 87(1), 87-104.
- कुमार, एस. (संपादक). (2016). भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा: वार्षिक समीक्षा 2015–16.
- रिक्टर, डब्ल्यू. एल. (1987). मिसेज गांधी का पड़ोस: पड़ोसी देशों के प्रति भारतीय विदेश नीति। एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन जर्नल, 22(3-4), 250-265.
- बुदानिया, आर. (2001). भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा की समस्या: पाकिस्तान कारक और भारत की नीति प्रतिसाद। इंडस पब्लिशिंग।
- खेतरान, एम. एस. (2017). भारत की पड़ोसी देशों में भारतीय हस्तक्षेप। स्ट्रैटेजिक अनुसंधान, 37(3), 112-125.